ओ३म्

एक निवेदन

हम सभी अपने आप को मनुष्य कहते है परन्तु क्या हम मनुष्य बन पाए है ? हमारी जो बुद्धि है वह क्या केवल सामानों की कीमत, गुणवता का ही मूल्यांकन करने के लिए है ?? धर्म कर्म के नाम पर जो लोग समाज को गुमराह कर रहे है उनकी बातो का मूल्यांकन करना क्या हमारा काम नहीं है ?? और अगर हम धर्म, कर्म के नाम पर किसी की भी बात पर आंख बंद कर विश्वास कर रहे है तो क्या यही मनुष्यता की परिभाषा है ?? जैसे हम किसी सामान की जांच कर उसे खरीदते है उसी तरह समाज में अपनी मीठी मीठी बातो से जो लोगो को गुमराह करते है उनकी बातो की जांच करना क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं है ?? आखिर कब तक हम लोग धर्म के नाम पर लूटते रहेंगे ?? हिन्दू समाज की हालत ऐसी हो गई है कोई भी आता है और हिन्दू समाज को मंदिर का घंटा समझ कर बजा कर चला जाता है |लेकिन आज जरुरत हमे बजने की नहीं बल्कि हमे बजाने वालो की वालो की पहचान कर उनका भंडा फोड़ करने की है ?

पाखंडियो का भंडा फोड़ करने के लिए समाज जो जागना होगा और समाज को जगाने का काम महर्षि दयानन्द कृत **सत्यार्थ प्रकाश** से बेहतर कोई नहीं कर सकता |यह पुस्तक आपको सत्य की पहचान करने की शक्ति देती है |अत: आप से निवेदन है आप इसे एक बार पक्षपात छोड़कर जरूर पढ़े | कारण पक्षपात करना मनुष्य का काम नहीं है|

अंत में आप से फिर निवेदन करता हूँ पक्षपात छोड़कर इस पुस्तक को पढ़े और सत्य को पहचाने और उसे धारण करे |इस पुस्तक का उद्देश्य किसी की भावनाओ को आहात करना नहीं है बल्कि तर्क और प्रमाण के माध्यम से सत्य की पहचान करना है |

प्रदीप कुशवाहा
एक आर्य

Sai Completely Exposed at a Glance

प्र – आपको साईं से क्या तकलीफ है ??
समीक्षा - तकलीफ साईं से नहीं बल्कि साईं के उन चाटुकारों से है जिन्होंने विना जाने और सोचे समझे एक मुसलमान को ईश्वर बनाकर धर्म का व्यापार कर रहे है | ये मुर्ख लोग साईं को कभी ईश्वर तो कभी ईश्वर का अवतार तो कभी सद्गुरु बनाकर समाज को बेवकूफ बनाते है |

प्र - आप साई को मुस्लिम कैसे कह सकते है ?
समीक्षा - मै नही कह रहा साई मुस्लमान थे साई ने खुद कहाँ है वह यवन (मुस्लमान) है - प्रमाण अध्याय- 28 आप शिर्डी से प्रकाशित साईं सत्चरित मंगाकर पढ़ ले या ऑनलाइन पढ़ ले उसमे आप को साईं के मुसलमान होने के एक नहीं अनेक प्रमाण मिलेंगे |
प्र - जन्म लेने से क्या होता है कर्म होना चाहिए |
समीक्षा - जी बिल्कुल सही कहा आपने कर्म होना चाहिए , आप साई सत्चरित पढ़े उसमे अनेको प्रमाण है जैसे:-
साई मस्जिद मे रहते थे - अध्याय - 1,2,5,9,11,14,23,26 |
हमेशा अल्लाह का नाम जपते थे अध्याय - 4,5,13,14
अल्लाह तुम्हारी इच्छा पूरी करेगा - अध्याय - 14
अल्लाह मालिक सदा उनके होठो पर था अध्याय- 23
बाबा आश्वासन देकर बोले अल्लाह अच्छा करेगा अध्याय- १३

अब आप ही तय करे यह कर्म किसके होते है ??? ऐसे कर्म करने वाले को क्या कहा जाएं ??

प्र - साई महान थे , संत का कोई धर्म नही होता !
समीक्षा - वाह जी वाह खूब घोड़े दौराए और नाला भी पार नहीं कर पाए और कुछ कहने को नही बचा था | अगर संत का कोई धर्म नही होता है तो मुसलमान (मौलवी, ईमाम) और ईसाईयों (पादरी) से अपनी घर की बेटी बहनो का विवाह क्यो नही करा देते ??
किसी को बिना जाने व समझे महान कहना मंदबुद्धि व अन्धमता का प्रमाण है पहले जाने , समझो , उसके महानता के कारनामे देखे फिर तय करो वह महान है वा नही ??
आप जिस तरह साईं को दिखा रहे हो अगर इसे सच माना जाए तो साईं से बड़ा देशद्रोही और गद्दार कोई नहीं होगे | जो मुर्दे को जीवित रखने की ताकत होते हुए भी १८५७ के जंग में देश का साथ नहीं दिया ??

प्र - साई मानवता के सच्चे उपदेशक थे , सबका मालिक एक उनका उपदेश था |
समीक्षा - सच्चे उपदेश थे या क्या थे यह तो उनको पढ़कर पता लग जाता है , आप को बताने की जरुरत नहीं | जब साई बकरा काटते थे तब उनकी मानवता कहाँ चली जाती थी ? जब माँस मिला चावल लोगो

को प्रसाद देते थे तब मानवता कहाँ चली जाती थी ?? बकरे को काटना कहाँ की मानवता है ? प्रमाण :-- अध्याय - 11

सबका मालिक एक यह बात साई ने तो कभी नही कहाँ है लेकिन आप जैसे चमचो ने यह भ्रम लोगो में जरुर फैलाया जो बजार मे अपनी ईमानदारी को बेच आए है और लोगो को गुमराह कर धर्म का व्यापार कर रहे है |साई ने हमेशा कहाँ अल्लाह मालिक जिसका अनेक प्रमाण हमने दिया है| आप पूरे साईं सत्चरित से एक भी प्रमाण नहीं दे सकते की साईं ने कहां है सबका मालिक एक |

प्र - साई का उपकार नही भूलाया जा सकता है|

समीक्षा - आप जैसे अक्ल के अंधो को भी नही भूलाया जा सकता , आप साई को जितना शक्तिशाली बता या दिखा है और जिस तरह उसे चमत्कारी बता रहे है , तो उन्होने अपनी शक्ति की प्रयोग अंग्रेजो के खिलाफ १८५७ के जंग मे क्यो नही किया ?? क्यो अंग्रेजो के लूट , हत्या , बल्तकार , शोषण , अत्याचारो को देखते रहे ?? आपकी बातो से ऐसा प्रतीत होता है साई कोई एक जादूगर था| जिस प्रकार जादूगर बनावटी रूपये पैसे , लड़का लड़की तो बना सकता है लेकिन अपने आप को करोडपति नही बना सकता , या किसी गरीब को अमीर नही बना सकता| ऐसे ही आपके साई बाबा है| जो शिर्डी के लोगो को बनावटी जादू दिखाते रहे लेकिन कभी देश व राष्ट्र के प्रति भक्ति नही दिखाया| अंग्रेजो और मुसलमानों से जंग लड़ रहे भारतोयो का साथ नहीं दिया ?? क्या साईं के इसी उपकार को नहीं भुलाया जा सकता है ???

प्र - महापुरूषो का अवतार मानवता के लिए होता है देश व राष्ट्र की सीमा नही होती उनके लिए|

समीक्षा - बिल्कुल सही कहाँ आपने , अंग्रेजो जो भारतीयो को गुलाम बनाए हुए थे उनका शोषण कर रहे थे वे शायद आपके और आपके साई के रिश्तेदार लगते थे , इसलिए आपको गुलाम और शोषणकर्ता मे सीमा नजर नही आता |

श्रीराम और श्रीकृष्ण भी धर्मात्मा थे जिन्होने इस देश के अपना सबकुछ दाव पर लगा दिया परन्तु देश को अधर्मीयो के हाथो लूटने नही दिया| तो आप साई भक्तो की नजर मे श्रीराम और श्रीकृष्ण ने गलत किया है ???

किस मानवता की दुहाई दे रहे है आप क्या अपने ही देशवासीयो को गुलामी की जंजीरो से निकलना अमानवता है ???

प्र - ठीक है साई ईश्वर नही है लेकिन वे एक सच्चे सद्दगुरू है|

समीक्षा - वे गुरू आप जैसे अक्ल के अंधे और गाँठ के पूरे जैसे के होगे , जो Om sai ram या Jai Sai Ram जप कर अपनी अंधभक्ति और मंदबुद्धि होने का प्रमाण देते है| जब आप साई को गुरू मानते है तो फिर आप भी शुरू किजिए :-

१) अल्लाह का नाम जपना

२). मस्जिद मे रहना - अध्याय - 4,

३). अल्लाह सब ठीक करेगा यह आशीष देना

४).भोजन से पहले फातिहा पढना - 38

५). बकरे को काटना - अध्याय : 11

६). गाली गलौज करना - अध्याय : 1

७). गरीब का अल्लाह भाई - अध्याय : 5

८). शाकाहारी लोगो को जबरदस्ती माँस खिलाना - अध्याय : 11

९). लोगो को बेवकूफ बनाना - साई सत्चरित

१०). चीलम पीना - अध्याय - 5

११). लोगो को मांसाहारी प्रसाद देना - अध्याय 38

जब आप साई को गुरू मानते है तो आपको यह कर्म करना पड़ेगा क्योकी आपके गुरू ने यह सभी काम किए हुए है गुरु के नक्शे कदम पर चलना प्रत्येक शिष्य का कर्तव्य है |

प्र - कभी शिर्डी जाकर साई का मन्दिर देखो कितनी भीड़ लगती है वहाँ श्रद्धालुओ की लाखो रूपये का महीने मे चढ़ावा आता है

समीक्षा - देखा है शिर्डी जाकर साई को बखूबी देखा है | आप जिसे मन्दिर कह रहे है दरअसल वह साई का कब्र है आपकी आँखो पर अंधविश्वास का चश्मा होने के कारण आपको नजर नही आया | शिर्डी मे जहाँ अक्ल के अंधे ने साई की मूर्ति बैठा रखी है ठीक उसकी नीचे साई का कब्र है जिसपर हमेशा माला चढ़ाया रहता है | कुछ और भी बोलना है आपको ?

मन्दिर मे लाखो रूपये का चढ़ावा आता है लेकिन वो जाता कहाँ है ???

वह जाता है आप जैसे लोगो के जेब मे जो धन के लालच मे साई का प्रचार करते है , वह जाता ऐसे लालची व्यपारियो को जो कुछ पैसो के लालच मे अपनी दुकान , कल कारखानो, बस ट्रको आदी गाड़ीयो के मालिक के जेब मे जो शिर्डी शहर मे चारो तरफ साई नाम को लिखवा रखे है | देश के अन्य भागो में जो साईं संस्था बना रहे है , हिन्दू मंदिरों में साईं की मूर्ति रख रहे है

हमारे देश मे कितने की अपदा विपदा , भूकम्प, त्रासदी, भू संख्लन, बाढ़, सूखा आए क्या किसी भी विपत्ति भी साई ट्रस्टो वाले ने सहयोग दिया है ??? साई तो मर गये फिर उस रूपये गहनो का क्या मतलब ??

प्र - साई से माँगी हुई हर मन्नत पूरी होती है जैसे नौकरी, बेटा , धन आदी

समीक्षा - यह पाखंड से ज्यादा कुछ भी नही और ये बाते केवल लोगो को बेवकूफ बनाने के लिए है | एक मरा हुआ व्यक्ति भला किसी की मन्नते कैसे पूरी कर सकता है ?? जब साई आपकी मन्नते पूरी कर देता है तो बेटे के लिए डॉक्टर का चक्कर क्यो लगाते है ? **जब साई से माँगने से आपको बेटा मिलता है तो वह किसका बेटा है आपका या साई का ?** पिता की जगह अपना नाम न लिख साई का नाम लिखे ? नौकरी या रोजगार के लिए जगह जगह क्यों भटकते हो ?? इसी प्रकार नौकरी वा धन के लिए चुपचाप घर बैठकर साई साई जपे नौकरी वा धन अपने आप मिलते है या नही देख ले ??

फिर तो आपकी और आपके साई की बात झूठी साबित हो रही है |

इसी आशावादी बातो से समाज कर्म करना छोड़ भाग्यवादी होकर अपना और देश दोनों का नुकसान करते है |

प्र - आप चाहे साई को कुछ भी कहे हम नही मानते है आपकी बातो को और साई ने कभी नही कहाँ मेरी पूजा करो |

समीक्षा - जब आँखो पर अंधविश्वास, अंधभक्ति का चश्मा लगा हो तो उसे कोई भी रास्ता नही दिखा सकता और उसको दुर्घटना से कोई नही बचा सकता |

लगता है आपकी जेब मे गुप्त रूप से धन आता है तभी आपको साई भक्ति से ज्यादा कुछ नही दीखता , देखे साई ने क्या कहाँ है

१). मेरा पूजा स्मरण करने वालो को मै मुक्ति प्रदान करता हूँ - अध्याय : 3

२). मै समस्त प्राणियो को प्रभू और घट घट मे व्याप्त हूँ - अध्याय : 4

३). साई अन्नत है - अध्याय : 28

४). मै तुम्हारे ह्रदय की समस्त ईच्छाएँ पूरी कर दूगाँ - अध्याय : 25

५). वे भाग्यशाली है ज्नके समस्त पाप नष्ट होने है , वे मेरी उपासना की ओर अग्रसर होते है | यदि तुम केवल साई - साई स्मरण करोगे तो मै तुम्हे भवसागर से पार उतार दूगाँ - अध्याय : 13

६). न्याय , मीमांशा और शास्त्रों की जरुरत नहीं केवल साईं पर विश्वास करने से ही भवसागर पार उतार देंगे |

७). मेरे नाम से ही सभी पाप नष्ट हो जाते है अध्याय- 12

८). सदैव साईं साईं स्मरण करो तुम्हे मुक्ति प्राप्त हो जाएगी अध्याय- 10

प्र :- साईं त्याग की मूर्ति है | साईं ने कभी किसी से पैसा नहीं माँगा तो त्याग की भावना से तो उनकी पूजा की ही जा सकती है ??

समीक्षा :-अगर पूजा ही करना है तो उस परमपिता परमात्मा की करो जिन्होंने सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पहाड़, नदी आदि बनाये , यहाँ तक की जीने के लिए हमे मुफ्त में ऑक्सीजन दे रहे और बदले में कुछ नहीं माँगा | लेकिन आपके साईं को पढ़कर ऐसा लगता है उन्हें खाने से ज्यादा पैसे की जरुरत थी |शायद वे भोजन में रूपए पैसे ही खाया करते थे | आँख खोलकर पढ़ लो ---

०१) बिना पैसे के मस्जिद में दर्शन नहीं दिया और दर्शन के लिए चालीस हजार रूपए मांगे - प्रमाण अध्याय 11

०२) किसी किसी से तो वे इच्छित राशी से भी अधिक मांग कर बैठते थे और यदि उसके पास नहीं है तो दुसरे से उधार लेने या दुसरे से मांगने को भी कहते थे | किसी किसी से तो वे दिन में तिन चार बार दक्षिणा माँगा करते थे | प्रमाण अध्याय - 15

और भी कुछ कहना है या इस साईं रूपी का पाखंड का त्याग कर सत्य की राह पर लौटना है |

प्र:- शाकाहार की प्रेरणा के लिए तो साईं की पूजा की जा सकती है, इसमें तो कोई आपत्ति नहीं ?

समीक्षा:- आपत्ति तो इससे है की आप समाज पर जबरदस्ती साईं का बोझ लाद रहे है वो भी बिना जाने, सोचे और समझे | यह बात मै दावे के साथ कह सकता हूँ आज आप को साईं के बारे में जितना ज्ञान हुआ है इससे पहले कभी नहीं हुआ होगा | यह बात सोचनीय है जो इंसान स्वय बकरा कटा हो उससे भला शाकाहार की प्रेरणा कैसे ली जा सकती है |

प्रमाण अध्याय- 11 **बाबा ने कहा – मै मस्जिद में एक बकरा हलाल करना वाला हूँ उससे (फाल्के) से पूछो उसे क्या रुचिकर होगा – बकरे का मांस, नाध या अंडकोष ??**

हाजी सिध्की साहब का शामा को जबाव " यदि बाबा के भोजन पात्र में से एक ग्रास भी मिल जाए तो हाजी अपने आप को सौभाग्यशाली समझेगा "|

ये स्पष्ट प्रमाण है की साईं मांस खाता था और बकरों की हत्या किया करता था |

प्रमाण अध्याय- 23 **मस्जिद में एक अत्यंत दुर्बल बूढ़ा और मरने वाला बकरा लाया गया | लेकिन जैसे ही बाबा बाबा ने काका से कहा की मै स्वय बकरा काटूँगा बकरा गिर कर मर गया |**

अब आप लोग ही विचार करे क्या ऐसे व्यक्ति से कभी शाकाहार की प्रेरणा ली जा सकती है ??

प्र :- वैसे बात तो आपकी सही है पर इस साईं की मूर्ति का क्या करे ?? फिर पूजा किसका करे ??
समीक्षा :- जो काम अपने घर के कचड़े का करते हो वही इसका करो कचड़े को कचड़ा पेटी में डाल दो | अब तक जो किया वह अज्ञानतावश किया और जब सत्य मालूम है तो सच्चाई के रास्ते पर चलो | उस निराकार परमपिता परमात्मा का ध्यान करो और उनकी उपासना करो |जिसने अग्नि जल, वायु, सूर्य, पेड़ आदि सबकुछ दिया और बदले में कुछ नहीं माँगा |

केवल इतना ही नहीं साईं की बात पर पर भी ध्यान दे - प्रमाण अध्याय- 24
बाबा ने कहां - मुझ पर विश्वास रखो | यधपि मै देहत्याग भी कर दूंगा, परन्तु फिर भी मेरी अस्थियाँ आशा और विश्वास का संचार करती रहेंगी | केवल मै ही नहीं, मेरी समाधी (यानि कब्र) भी वार्तालाप करेगी, चलेगी, फिरेगी और उन्हें आशा का सन्देश पहुचती रहेगी, जो अनन्य भाव से मेरी शरणागत होंगे | निराश न होना की मै तुमसे विदा हो जाऊंगा | तुम सदैव मेरी अस्थियो को भक्तो के कल्याण में ही चिंतित पाओगे |

यहाँ बाबा ने कब्र को समाधी कहा है यह बाबा के अज्ञानता का सबसे बड़ा प्रमाण है | क्योकि शायद साईं को मालूम ही नहीं था की कब्र और समाधी में क्या अंतर होता है | रोजाना हजारो लोग साईं का दर्शन करते है लेकिन उसमे से कितने लोगो से साईं ने कब्र के अन्दर से बात की है ?? मै भी शिर्डी गया हूँ साईं साईं रट रहा था की शायद कब्र के अन्दर से साईं की आवाज आएगी , तभी एक पुलिसवाला आया और मेरा हाथ पकड़कर बाहर निकलने वाले रास्ते की ओर ढकेल दिया |

एक बात और जिन गाडियों का दुर्घटना होती है उनमे से कई गाडियो पर साईं की तस्वीर होती है तो क्या ये दुर्घटनाये साईं की भक्तो की चिंता के कारण होती है ??

जो लोग शिर्डी जाते है और रास्ते में उनका दुर्घटना हो जाता है तब साईं उन्हें बचाने क्यों नहीं आते है ??

साईं की इन बातो से यह पता चलता है लोगो को बेवकूफ बनाने का काम पहले साईं ने ही शुरु किया है , और उनके अंधभक्तो में इसे पुरे हिन्दू समाज में फैला दिया |

कुछ प्रश्न जिनपर जरुर सोचना चाहिए !!

- एक बात समझ नही आती मुस्लमान और ईसाई साई के मन्दिर मे जाकर माथा क्यो नही टेकते ?? क्यो नही पैसे या गहने चढ़ाते है ?? क्यो नही साई से मन्नते माँगते है ??? क्यो नही साई के लिए अलग मस्जिद या चर्च बनाते है ?? क्यो नही अल्लाह या यीशु मसीह के साथ साई को जोड़ते है ??
- क्योकी वे पेदी वाले लोटे और हिन्दू बिना पेदी वाले |
- आप सोचेगे ऐसा क्यो बोला ? तो सुनिए मुस्लमान और ईसाईयो की सभी मुरादे मस्जिद और चर्च मे पूरी हो जाती है जबकी हिन्दूओ की जरूरते ब्रहमा, बिष्णु, शिव, दुर्गा, काली, मनसा, बैष्णो देवी, बालाजी, कार्तिक, गणेश, इन्द्र, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी, काली, …….. ३३ करोड़ इनकी जरूरतो को पूरा नही कर पाते फिर ये साई, पीर , मजार, जीन, जीनाद, फादर आदी के चक्कर काटना शुरू करते है और दरगाहो पर चादर चढ़ाना | जो की इन्ही हिन्दूओ के पूर्वजो पर शासन किया , और उनका कत्ल किया, हिन्दू बेटी बहनो की इज्जत लूटी उन्ही के कब्रो पर हिन्दू समाज फूल माला चढ़ाए तो ऐसे हिन्दू को बिना पेदी का लोटा न कहे तो क्या कहे ???

- साई को कुछ भी कहने से पहले इन प्रश्नो पर विचार करे ??
- १). साई शब्द का अर्थ क्या है और यह किस मत या सम्प्रदाय से होते है ??
- २). साई का वास्तविक नाम क्या था ? जन्म कहाँ और कब हुआ ??
- ३). साई ने शिक्षा किससे प्राप्त की ?? क्योकी बिना शिक्षा के कोई इतना महान कैसे बन सकता है ?
- ४). साई किसके उपासक थे ?? किसका नाम जपते थे ?
- ५). साई ने किसी ग्रन्थ की रचना की ?
- ६). साई मे जब इतना ताकत था की वे बिमार को छूने मात्र से ठीक, अंधे को रोशनी, गरीब को धन दे सकते थे तो अंग्रेजो से लोहा क्यो नही लिया ?? १८५७ के विद्रोह मे कहाँ चले गये थे ?? ठीक है तलवार उठाकर नही लड़ सकते तो जो अंग्रेजो द्वारा घायल होते थे उन्हे केवल स्पर्श करते जाते वे ठीक जाते और फिर से अंग्रेजो से लड़ाई लड़ते ?? जिनका धन गोरे लूट लेते थे उन्हे फिर से धन देते ? जब अंग्रेज दिखते तो उन्हे अपनी ताकत से अंधा या विकेलागं कर देते ??
- अगर साई ने ऐसा एक भी काम किया होता तो हमे आजादी १८५७ मे ही मिल गई होती लेकिन साई ने देश के लिए कोई चमत्कार नही किया ! इतनी ताकत रखते हुए भी कोई देश की रक्षा न करे तो उसे क्या कहे भगवान या गुरू या देशद्रोही या पाखण्डी ??
- क्योकी जिस महाराष्ट्र के शिर्डी मे साई का रहते थे उसी महाराष्ट्र के शिवाजी थे जिन्होने औरंगजेब का जीना हराम कर दिया उसकी सलतन्त को तोड़ डाला और इनके आगे शम्भाजी, शाहूजी , बाजीराव पेशवा आदी आदी इन सभी ने मुगलो और गोरे से अजादी की लड़ाई मे अपने जान तक की परवाह नही की , लेकिन साई ने इतना ताकत रहते हुए भी ऐसा कुछ नही किया |
- आपलोगो से हाथ जोड़कर विनती है गुस्सा या आग बबूला होने के बजाय सच को जानने की कोशिश करे ! एकबार ईमानदारी से साई सत्चरित पढ़ ले दुध का दुध और पानी का पानी नजर आने लगेगा

जिन्होंने साईं को पहचान लिया वे कुछ ऐसा गाना गाते है

अब पेश है साई पर एक गाना , इस गाने को शिर्डी वाले साई बाबा (फिल्म - अमर अकबर एंथोनी) के तर्ज पर गाए |

शिर्डी वाले कसाई बाबा , आया है तेरे दर पे सवाली
लब पे दुआए आँखो मे आँसू , दिल मे उम्मीदे पर बुद्धि खाली
शिर्डी वाले .... |
ओ कसाई देवा कोई मुल्ला ईसाई न तेरा नाम लेवा ,
चले आते है दौड़े जो मूर्ख हिन्दू जो ठहरे ,
ये बुद्धि के है मारे नही अक्ल को प्यारे ,
न तूझे जानते न पहचानते है ,
पर्दा को Vaidic Vichar ने उठाया , कसाई को घर से निकालावाया ,
तू लोगो को बेवकूफ बनाया माँस मिला चावल प्रसाद खिलाया
शिर्डी वाले .... ||
खुदा पे शान तुझको मूर्ख हिन्दू माने भगवान तुझको ,
तू लोगो को बेवकूफ बनाया मूर्ख हिन्दूओ को भटकाया २ ,
बकरा भी काटा तूने चीलम भी पीया ,
देश के लिए न कोई काम किया ,
तेरे पाखंड का किस्सा ब्याँ करे क्या ,
वो हिन्दू बिन बुद्धि के जिनका तू मालिक |
शिर्डी वाले.......

ओउम साईं स्वाहा: